ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने प्रणत क्लेश्नाशाय गोविन्दाय नमो नमः ।

।।आचमनमन्त्रः।।
ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।1।। (इससे एक)
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।।2।। (इससे दूसरा)
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा।।3।। (इससे तीसरा)

।।अंगस्पर्शमन्त्रः।।
ॐ वाङ्मऽआस्येऽस्तु।। (इस मंत्र से मुख)
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु।। (इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।। (इस मन्त्र से दोनों आँखे)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।। (इस मन्त्र से दोनों कान)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु।। (इस मन्त्र से दोनों बाहु)
ॐ ऊर्वोर्मेऽ ओजोस्तु।। (इस मन्त्र से दोनों जंघा और)
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु।।
(इस मन्त्र से सारे अंगों का मार्जन करें)

।।प्रार्थनामंत्रः।।
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।1।।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।2।।

ॐ य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।3।।

ॐ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।4।।

ॐ येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽ अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।5।।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ताबभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽ अस्तु वयं स्याम पतयोरयीणाम्।।6।।

ॐ स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।7।।

ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽ अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम।।8।।

।।अग्न्याधान मंत्रः ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः।। (यहाँ कपूर से अग्नि प्रज्वलित करें)

ॐ भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।।
(प्रज्वलित कपूर को वेदी में रखें)

।। अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र।।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳ सृजेथामयं चं । (ꣳ *इसे* ***ग्वम*** *पढ़ें*)
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।।

।।समिधाधान के मंत्र ।।

ॐ अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय
चास्मान् प्रजया पशुभिर्बह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।।
इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम ।।1।। (इससे पहली समिधा)

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या
जुहोतन सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा ।। इदमग्नये जातवेदसे -
इदन्न मम ।।2।। (इससे दूसरी समिधा)

ॐ तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा
यविष्ठय स्वाहा ।। इदमग्नयेऽइङ्गिरसे - इदन्न मम ।।3।।
(इस मंत्र से तीसरी समिधा की आहुति देंवे)

।।घृताहुति मंत्र:।।

ॐ अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय
चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।।
इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम ।।1।।
(यह मन्त्र पाँच बार पढ़कर पाँच घृताहुति दें।)

।।जल प्रसेचन के मन्त्र।।

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व ।।1।। (इस मन्त्र से पूर्व में)
ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व ।।2।। (इस मन्त्र से पश्चिम में)
ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व ।।3।। (इस मन्त्र से उत्तर में और)
ॐ देव सवितः प्रसु व यज्ञं प्रसु व यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।4।।
(इस मंत्र से चारों दिशाओं में जल छिड़के)

।।आग्न्याहुतिमन्त्र:।। (चार घृताहुति दें)

ॐ अग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये - इदन्न मम । (पहली घृताहुति)
ॐ सोमाय स्वाहा।। इदं सोमाय - इदन्न मम । (दूसरी घृताहुति)
ॐ प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये - इदन्न मम । (तीसरी घृताहुति)
ॐ इन्द्राय स्वाहा ।। इदं इन्द्राय - इदन्न मम । (चौथी घृताहुति)

।। प्रातःकाल आहुति के मन्त्र ।।

ॐ सूर्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्यः स्वाहा ।।1।।
ॐ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।2।।
ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा ।।3।।
ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।4।।

।। सायंकाल आहुति के मन्त्र ।।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।1।।
ॐ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।2।।
ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।3।।
ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्रयेन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।।4।।

।। प्रातःकाल आहुति के शेष मन्त्र ।।

ॐ भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।। इदमग्नये प्राणाय - इदन्न मम ।।1।।

ॐ भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ।। इदं वायवेऽपानाय - इदन्न मम ।।2।।

ॐ स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।। इदमादित्याय व्यानाय - इदन्न मम ।।3।।

ॐ भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः - इदन्न मम ।।4।।

ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।।5।।

ॐ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा ।।6।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ।।7।।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।।8।।

।। अब गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् स्वाहा ।।

।। महा मृत्यंजय मन्त्र तीन बार पढ़ें ।।

ॐ त्र्यंबकमं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। स्वाहा।।

(इन मंत्रों के बाद अन्य मंत्रों की भी आहुति दी जा सकती है।)

।। स्विष्टकृदाहुतिमन्त्र:।। (यहाँ मिष्ठान अग्नि में समर्पित करें)

ॐ यदस्यकर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम् ।
अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।
अग्नये स्विष्टकृते सहुतहुते सर्वप्रायश्चिताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे
सर्वान्नः कामान्त् समर्द्धय स्वाहा।। इदम् अग्नये स्विष्टकृते-इदन्न मम ।।

।।आहुति।। (तीन बार पढ़ें)

ॐ सर्व वै पूर्ण ँ स्वाहा।। (ँ *इसे* ***ग्वम*** *पढ़ें*)

।। पूर्ण घृताहुति।।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारं ।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

।। शान्ति मंत्र ।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः (ँ *इसे* ***ग्वम*** *पढ़ें*)
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शांतिर्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शांति, शांति, शांतिः ।।

।। नमस्कार मंत्र ।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।।
ॐ शांति, शांति, शांतिः ।।

।। आशीर्वाद मन्त्र ।। (जन्मदिन के अवसर पर)

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम
शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम
शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

।। परस्पर में सहयोग हेतु प्रार्थना ।।

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।।
ॐ शांति, शांति, शांतिः ।

।। कल्याण भावना की प्रार्थना।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।
ॐ शांति, शांति, शांतिः ।।

प्रार्थना

यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्जवल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मगन सारे, शोक सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ परोपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें।।
कामना मिट जाए मन से, पाप अत्याचार की।
भावनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नारि की।।
लाभकारी हो हवन, हर प्राणधारी के लिए।
वायु-जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा, आपकी हम पर रहे।।
ॐ शांति, शांति, शांतिः ।।